छायावादोत्तर काव्य में युग-बोध

डा गीता रानी

असिस्टेंट प्रोफेसर-हिंदी

जनता वैदिक कॉलेज बड़ौत

हिंदी साहित्य के विकास क्रम में छायावादोत्तर काव्य वह महत्वपूर्ण चरण है, जहाँ कविता ने आत्मकेंद्रित भावभूमि से आगे बढ़कर जीवन के व्यापक यथार्थ को अपनी अभिव्यक्ति का केंद्र बनाया। छायावाद की स्वप्निल, रहस्यात्मक और अंतर्मुखी चेतना के बाद यह काल सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों की तीव्र अनुभूति से निर्मित हुआ। 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ का लखनऊ सम्मेलन 1936 इस परिवर्तन का निर्णायक संकेतक बना।

इस युग में कविता केवल सौंदर्य की साधना नहीं रही, बल्कि जीवन-संघर्ष, सामाजिक विषमता और मनुष्य की जटिलताओं की सशक्त अभिव्यक्ति बन गई। यही व्यापक दृष्टि 'युग-बोध' के रूप में प्रकट होती है।

युग-बोध की अवधारणा :

'युग-बोध' से आशय उस समय विशेष की सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रति कवि की सजगता और संवेदनशीलता से है। यह केवल घटनाओं का चित्रण नहीं, बल्कि उस युग की चेतना, उसके अंतर्विरोध और उसकी आकांक्षाओं का सृजनात्मक रूपांतरण है।

छायावादोत्तर काव्य में युग-बोध अत्यंत प्रखर, यथार्थपरक और बहुआयामी रूप में उपस्थित होता है।

1. सामाजिक यथार्थ का सशक्त चित्रण :

छायावादोत्तर कविता का सबसे प्रमुख स्वर सामाजिक यथार्थ का है। यहाँ कवि ने समाज के वंचित, शोषित और उपेक्षित वर्गों के जीवन को केंद्र में रखा। किसान, मजदूर, निम्न वर्ग और आम जन की पीड़ा कविता का विषय बनती है।

नागार्जुन की कविताओं में ग्रामीण जीवन की कठोर सच्चाइयों का यथार्थ चित्रण मिलता है। वे सीधे, तीखे और व्यंग्यात्मक ढंग से व्यवस्था पर प्रहार करते हैं।

इस युग में कविता समाज के 'नीचे' तक उतरती है और वहाँ की वास्तविकताओं को अभिव्यक्ति देती है।

2. वर्ग-संघर्ष और मार्क्सवादी चेतना :

छायावादोत्तर काव्य पर मार्क्सवादी विचारधारा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम माना गया और वर्ग-संघर्ष को प्रमुख विषय के रूप में स्वीकार किया गया।

रामधारी सिंह दिनकर की कविताओं में क्रांति, संघर्ष और अन्याय के विरुद्ध स्वर मुखरित होता है।

इस युग का कवि केवल संवेदनशील दर्शक नहीं, बल्कि सक्रिय परिवर्तनकारी दृष्टि वाला रचनाकार बन जाता है।

3. राष्ट्रीय चेतना और स्वतंत्रता आंदोलन :

स्वतंत्रता आंदोलन के प्रभाव से इस काल की कविता में राष्ट्रीयता का स्वर भी विद्यमान है। हालांकि यह छायावाद की भाँति भावुक नहीं, बल्कि अधिक यथार्थवादी और संघर्षशील है। कविता में देशप्रेम, स्वतंत्रता की आकांक्षा और सामाजिक जागरण का स्वर मिलता है। यह युग राष्ट्र निर्माण की चेतना से भी प्रेरित है।

4. आधुनिक जीवन की जटिलता और शहरी बोध :

औद्योगीकरण और शहरीकरण के कारण जीवन में जटिलता बढ़ी। अकेलापन, असुरक्षा, तनाव और मानसिक द्वंद्व आधुनिक मनुष्य की पहचान बन गए।

अज्ञेय की रचनाओं में आधुनिक मनुष्य की इसी जटिल मानसिक स्थिति का सूक्ष्म चित्रण मिलता है।

यहाँ कविता केवल बाहरी यथार्थ ही नहीं, बल्कि आंतरिक विघटन को भी व्यक्त करती है।

5. अस्तित्ववादी संकट और व्यक्तित्व का विखंडन :

छायावादोत्तर काव्य में 'मैं' अब आत्ममुग्ध नहीं, बल्कि प्रश्नाकुल और विखंडित है। मनुष्य अपने अस्तित्व, उद्देश्य और पहचान को लेकर असमंजस में है।

गजानन माधव मुक्तिबोध की कविताओं में यह अस्तित्ववादी संकट अत्यंत गहराई से अभिव्यक्त हुआ है।

उनकी रचना "अँधेरे में" आधुनिक मनुष्य की बेचैनी और असुरक्षा का प्रतीक है।

6. राजनीतिक चेतना और व्यवस्था-विरोध :

इस युग की कविता में राजनीतिक विसंगतियों और भ्रष्टाचार के प्रति तीखा विरोध दिखाई देता है। कवि सत्ता और व्यवस्था की आलोचना करता है और आम जनता की पीड़ा को सामने लाता है।

कविता में व्यंग्य, विडंबना और कटु यथार्थ का प्रयोग बढ़ता है।

7. अंतरराष्ट्रीय दृष्टि :

द्वितीय विश्वयुद्ध, औपनिवेशिक संघर्ष और वैश्विक परिवर्तनों के कारण कवि की दृष्टि राष्ट्रीय सीमाओं से आगे बढ़कर अंतरराष्ट्रीय हो जाती है।

मानवता, युद्ध, शांति और विश्वबंधुत्व जैसे विषय भी कविता में स्थान पाते हैं।

8. मानवतावाद और संवेदनशीलता :

यद्यपि यह युग यथार्थवादी है, फिर भी उसमें मानवीय संवेदनाओं का गहरा स्थान है। करुणा, सहानुभूति और मानवता के मूल्य कविता में विद्यमान रहते हैं।

छायावादोत्तर कवि मनुष्य की पीड़ा को केवल चित्रित नहीं करता, बल्कि उसे समझने और बदलने की आकांक्षा भी रखता है।

9. स्त्री और दलित चेतना की शुरुआत :

इस काल में स्त्री और दलित वर्ग के प्रति जागरूकता भी विकसित होती है। यद्यपि यह पूर्ण रूप से विकसित नहीं थी, फिर भी इसकी प्रारंभिक अभिव्यक्ति दिखाई देती है।

यह आगे चलकर आधुनिक हिंदी कविता के महत्वपूर्ण आयाम बनते हैं।

10. युग-बोध की समग्रता :छायावादोत्तर काव्य में युग-बोध केवल एक पक्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि यह बहुआयामी है–

- सामाजिक
- राजनीतिक
- आर्थिक
- मनोवैज्ञानिक

- सांस्कृतिक

यह समग्रता ही इस युग की विशेष पहचान है।

उपसंहार :

निष्कर्षतः छायावादोत्तर काव्य में युग-बोध अत्यंत व्यापक, यथार्थपरक और प्रभावशाली रूप में उपस्थित होता है। इस युग की कविता ने जीवन के विविध आयामों को गहराई से समझा और उन्हें अभिव्यक्ति दी।

यह काव्यधारा केवल साहित्यिक परिवर्तन का संकेत नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के विकास का भी प्रतीक है। छायावादोत्तर कवियों ने कविता को समाज, विचार और यथार्थ से जोड़कर उसे अधिक प्रासंगिक और जीवंत बना दिया।

इस प्रकार, छायावादोत्तर काव्य हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ कविता जीवन के साथ गहराई से जुड़ती है और अपने समय की सच्ची अभिव्यक्ति बन जाती है।